विवेकानन्द के युवा संदेश की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ0 अदिती गोस्वामी
असिस्टेंट प्रोफेसर (गेस्ट फैकल्टी)
शिक्षाशास्त्र विभाग
महिला सेवा सदन डिग्री कालेज
प्रयागराज
Email: goswami1717@gmail.com

श्रीमती आराधना कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
महिला सेवा सदन डिग्री कालेज
प्रयागराज
dradhana14@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 10.09.2020
Approved: 28.09.2020

डॉ0 अदिती गोस्वामी
श्रीमती आराधना कुमारी

विवेकानन्द के युवा संदेश की वर्तमान में प्रासंगिकता

RJPP 2020,
Vol. XVIII, No. II,
pp.131-134
Article No. 014

Online available at *:*
https://anubooks.com/?page_id=6391

सारांश

'उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो'

– स्वामी विवेकानन्द

भारतीय संस्कृति की सबसे महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है जीवन को उसकी सम्पूर्ण में स्वीकार करना। वह जानती है कि भौतिक सृष्टि द्वन्द्वात्मक है। जहाँ पदार्थ और परिस्थितियाँ एक–दूसरे के विपरीत होते हुए भी परस्पर गुँथे हुये हैं। आज के दावानल में जलाते हुये विष्व के लिए स्वामी विवेकानन्द के विचार संजीवनी शक्ति प्रदायक है जो मनुष्य को सब प्रकार की संकीर्णता से ऊपर उठाकर विश्व बन्धुत्व की भावना को प्रतिष्ठित करती है। विश्व के प्रत्येक मनुष्य के भीतर अपार शक्ति है विवेकानन्द के अनुसार 'ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियाँ पहले से हमारे भीतर हैं वो हमीं हैं जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अन्धकार है।'

डॉ0 अदिती गोस्वामी, श्रीमती आराधना कुमारी

प्रस्तावना

'हमारे जीवन में स्वामी विवेकानन्द एक ऐसे तारे के रुप में है जो ज्ञान और उम्मीदों से भरा है। उन्होंने यह साबित किया है कि बैगर देह के भी वे हर जगह के लोगों को हर वक्त प्रेरित करते रहेंगे। आइए हम सब मिलकर उनके बताए रास्ते पर आगे बढ़े।'

–माननीय प्रणव मुखर्जी, पूर्व राश्ट्रपति

आज सम्पूर्ण विश्व में संस्कृति का संक्रमण काल चल रहा है ऐसे में भारतवर्ष कैसे अछूता रहता चारों और भौतिकवादिता अपने चरम पर है तथा संयम, त्याग, सेवा, मानवता, नैतिकता एवं आध्यात्मिक मूल्यों का प्रायः लोप हो रहा है। युवा वर्ग भी इसके प्रति विरक्त है चारों और बस भोग–विलास, लोभ, अनाचार, अधर्म, स्वार्थ लिप्तता हैं आध्यात्म का पतन हो रहा, युवा पथ भ्रष्ट हैं। उसे पता नहीं क्या सही है अथवा गलत? युवाओं में आत्मबल, आत्मिक शक्ति एवं नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। युवा वर्ग नित्य नयी समस्याओं एवं भविष्य को लेकर चिन्तन में डूबा है।

आज के भौतिकवादी युग में वैदिक युग के मूल्यों, आदर्शों एवं आध्यात्म के साथ समायोजन नही हो पा रहा है। ऐसे में स्वामी विवेकानन्द के युवाओं को दिये गये संदेश उतने ही प्रासंगिक हो रहे जितने की भूत में। स्वामी जी ने युवाओं को जीवन का यथार्थ दिखाते हुए समस्याओं का समाधान किया एवं उनको जाग्रत किया ''जीवन संग्राम में वीर बनो कहो सबसे कि तुम निर्भय हो भय का त्याग करो क्योंकि भय मृत्यु है, भय पाप है भय अधोलोक है भय अधार्मिकता है भय का जीवन में कोई स्थान नही है।''

स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन

स्वामी विवेकानन्द का दर्शन वेदान्त पर आधारित है जिसकी व्याख्या उन्होंने आधुनिक परिप्रेक्ष्य में की तथा निराशा एवं कुंठा के दल–दल में फँसी हुयी भारतीय जनमानस को जीवन का नया पथ दिखाया। उनका कहा था 'रोटी का प्रश्न हल किये बिना भूखे मनुष्य को धार्मिक नहीं बनाया जा सकता इसलिए रोटी का प्रश्न हल करने का नया मार्ग बताना मुख्य और पहला कर्त्तव्य है।' मनुष्य को मन, वचन और कर्म से शुद्ध होकर अर्थोपार्जन करना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन

स्वामी जी के अनुसार 'शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। मानव में शक्तियाँ जन्म से ही विद्यमान रहती है शिक्षा उन्हीं शक्तियों व गुणों का विकास करती है।' सभी ज्ञान चाहे व सांसारिक हो अथवा पारमाधिक मनुष्य के मन में निहित है। यह आवरण से ढका रहता है और जब वह आवरण धीरे–धीरे हटता है तो मनुष्य कहता है कि मुझे ज्ञान हो रहा है।'

स्वामी जी का युवाओं को संदेश

स्वामी जी ने अपने ओज वाणी द्वारा युवाओं को निरन्तर जागृत किया। पथ प्रदर्शित समस्याओं का हल एवं शंकाओं का समाधान किया। स्वामी जी का युवाओं का संदेश–

ऽ 'आज सम्पूर्ण देश को जिस चीज़ की आवश्यकता है वह है लोहे की माँसपेशियाँ और

फौलाद के स्नायु–दुर्दमनीय, प्रचण्ड इच्छा शक्ति जो सृष्टि के गुप्त तथ्यों और रहस्यों को भेद सके और जिस उपाय से भी हो अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में समर्थ हो।'

- 'नवयुवको! बलवान बनो। तुमको मेरी यही सलाह है गीता के अभ्यास की अपेक्षा फुटबाल खेलने के द्वारा तुम स्वर्ग के अधिक निकट पहुँच जाओगे तुम्हारी कलाई और भुजाएं अधिक मजबूत होने पर तुम गीता को अधिक अच्छी तरह समझोगे। तुम्हारे रक्त में शक्ति की मात्रा बढ़ने पर तुम श्री कृष्ण की प्रतिभा और अपार शक्ति को अधिक अच्छी तरह समझने लगोगे। तुम जब अपने पैरों पर दृढ़ता के साथ खड़े होगे और तुमको जब प्रतीत होगा कि हम भी मनुष्य हैं तब तुम उपनिषदों को और भी अच्छी तरह समझोगे और आत्मा की महिमा जान सकोगें'।
- 'जब तक आप स्वयं पर विश्वास नहीं करते तब तक आप ईश्वर पर विश्वास नहीं कर सकते अतः स्वयं पर विश्वास करो'।
- 'स्वयं को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है'।
- 'तुम्हें भीतर से जागना होगा कोई तुम्हें सच्चा ज्ञान ही दे सकता तुम्हारी आत्मा से बड़ा कोई शिक्षक नहीं'।
- 'जितना बड़ा संघर्श होगा जीत उतनी ही शानदार होगी। '
- 'जिस दिन आपके सामने कोई समस्या न आये आप सुनिश्चित हो सकते हो कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हो'।
- 'दुर्बल मस्तिष्क से कोई कार्य नहीं किया जा सकता अतः मस्तिष्क को सबल बनाना होगा'।

वर्तमान में समस्यायें

वर्तमान में समस्यायें हैं वो स्वामी जी के समझ में भी थी जिनका समाधान उन्होंने यथार्थ रुप से दिया समस्याएं हैं–

- युवा वर्ग जोश में तो है परन्तु होश में नही है।
- युवा पीढ़ी विलासी भोगी होने के कारण विज्ञान में रुचि है परन्तु वेद में नहीं।
- अपनी संस्कृति के प्रति उदासीनता और पाश्चात्य सभ्यता को अपनाने की होड़।
- डिग्रीयाँ तो अर्जित की जा रही परन्तु चरित्र का पतन हो रहा।
- स्वयं को प्राथमिकता।
- धैर्य, संयम और त्याग का अभाव।
- भौतिकवाद के पीछे दौड़ रहे किन्तु आध्यात्म का अभाव। आदि

उपरोक्त अनेको समस्यायें हैं जिनका समाधान होना आवश्यक है युवा वर्ग इनके पीछे दौड़ रहा परन्तु सही मार्ग नहीं पा रहा।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं को दिशा बोध कराया उनके समस्याओं एवं शंकाओं का

समाधान किया। स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं का पथ प्रदर्शन एवं समस्याओं का हल यथार्थ रुप से किया साथ ही उनको भारत के विराट आध्यात्मिक गौरव से साक्षात्कार करवा उनके मन–मस्तिष्क में छाये कुहारे को हटाया। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में ''हे युवाओं तुम उस सर्वशक्तिमान की संतानें हो। तुम उस अनन्त दिव्य अग्नि की चिंगारियां हो।' इसके साथ ही वह युवाओं से कहते हैं कि 'प्रत्येक आत्मा मूल रुप में देवस्वरुप है और लक्ष्य तक पहुँचना दिव्यता को जगाना है। एक बार लक्ष्य निर्धारित हो जाने पर जीवन उसी के अनुरुप आरम्भ हो जाता है जबकि लक्ष्य के अभाव में आधे से अधिक शक्तियाँ इधर–उधर नष्ट हो जाती है। आध्यात्किता के अभाव में व्यक्ति अपने भीतर की शक्ति (आत्मिक शक्ति) को भूल जाता है और समस्त प्रकार के कष्टों का वरण कर लेता है। स्वामी जी के शब्दों में 'अज्ञान ही सब दुःख–बुराइयों की जड़ है इस प्रकार हम स्वयं को दीन–हीन और दरिद्र मान बैठते हैं और दूसरों के प्रति भी ऐसी धारणा रखते हैं'। जब कि प्रत्येक समस्या का समाधान आध्यात्मिक और आत्मिक ज्ञान मनुष्य के भीतर स्थित है।

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं 'जब समस्त समस्याओं का समाधान तुम्हारे भीतर स्थित है तो फिर भौतिक जगत में भोग–विलास के पीछे क्यों भटक रहे। भोग की अंधी दौड़ अन्तहीन है 'मैं जानता हूँ', मार्ग बहुत कठिन है किन्तु यदि तुम्हारे अन्दर आदर्श की अग्नि प्रदीप्त है तो चिंता की कोई बात नहीं ऐसे मार्ग में असफलताएं आती हैं इनकी परवाह नहीं करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. स्वामी विवेकानन्द (2005), रामकृष्ण आश्रम, नागपुर, धन्तोली, 'नया भारत गढ़ो', पृ0–**38**
2. स्वामी विवेकानन्द (2002), रामकृष्ण आश्रम, नागपुर, धन्तोली, 'युवकों के प्रति', पृ0–**38**
3. वर्मा, एस0पी0 (6/जून/2011), दैनिक जागरण, प्रयागराज संस्करण 'विवेकानन्द की अद्भूत सांस्कृतिक विजय', पृं0–**8**
4. सम्पादक, (12/जनवरी/2014), नार्दन इण्डिया पत्रिका, प्रयागराज संस्करण, 'स्वामी विवेकानन्द', पृं0–**04**
5. चन्द्र, सुशील कुमार (2013), रामकृष्ण आश्रम नागपुर धन्तोली, 'चिन्तनीय बातें', पृं0–**23**
6. सम्पादक (14/अगस्त/2013), दैनिक जागरण, प्रयागराज संस्करण, 'हम क्षुद्र नहीं', पृं0–**14**